प्रसार शिक्षा निदेशालय

भूमिका

वर्ष 1966 में जब पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के अधीन कृषि महाविद्यालय पालमपुर की स्थापना हुई तो कृषि परामर्श सेवाओं हेतु प्रसार शिक्षा कार्यक्रमों की जरूरत महसूस हुई। वर्ष 1978 में हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद प्रसार शिक्षा निदेशालय की स्थापना हुई। प्रसार सेवाओं हेतु विश्वविद्यालय के मुख्यालय में प्रसार शिक्षा निदेशालय तथा प्रदेश के आठ जिलों में कृषि विज्ञान केन्द्र कार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के प्रसार कार्य नियोजित तथा पर्यवेक्षित है। प्रसार शिक्षा निदेशालय विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों राज्य सरकार के विभिन्न विभागों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् व दूसरी प्रसार ऐजिंसियों के तालमेल से कार्य संचालित करता है। विश्वविद्यालय के 36 वर्षों की अथक मेहनत तथा कृषि कार्यों में पर्याप्त उन्नति के कारण विश्वविद्यालय लगभग खाद्य–उत्पादन में आत्म निर्भर हो चुका है। अधिकाधिक खाद्य उपज के कारण हिमाचल प्रदेश के किसानों की अर्थ दशा में भरपूर बदलाव आए हैं।

प्रसार शिक्षा निदेशालय के उद्देश्यः

- विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रसार शिक्षा कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने हेतु योजना बनाना।
- कार्यान्वयन व मूल्यांकन का कार्य करना।
- विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों/संकायों की प्रसार गतिविधियों का पर्यवेक्षण व नियन्त्रण।
- राज्य सरकार के विभागों तथा सम्बन्धित महकमों के तालमेल से विश्वविद्यालय की प्रसार शिक्षा गतिविधियों को संचालित करना।

- विश्वविद्यालय प्रसार परिषद् में विश्वविद्यालय प्रसार गतिविधियों के बारे में सूचित करना व आवश्यक सुझाव प्राप्त करना।
- किसानों, महिला कृषकों, बागवानों, पशु–पालकों, पढ़ाई छोड़ने वाले युवकों, भूतपूर्वक सैनिकों को विविध कृषि सेवाएं देना व व्यवसाय आधारित प्रशिक्षणों का प्रबन्ध करना।
- मृदा, पौध व पशु स्वास्थ्य हेतु रेफरल सेवाएं देना।
- कृषि व सम्बन्धित क्षेत्रों हेतु प्रकाशन सामग्री तैयार करना ।
- किसानों व आम जनता के लिए किसान दिवस, किसान मेला व प्रदर्शनियों का आयोजन करना।

• प्रमुख गतिविधियां:

- अर्द्ध प्रसार प्रशिक्षण सेवाएं:
- खरीफ, रबी व सब्जी उत्पादन पर राज्य स्तरीय कार्यशालाओं का आयोजन करना।
- राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आयोजित करना।
- उत्पादन तकनीकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- पशुओं हेतु चारे व चारागाहों के प्रबन्ध पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- रिफ्रेशर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- खरगोश पालन, मधुमक्खी पालन, मृदा परीक्षण, बायोगैस तथा मछली पालन पर राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण आयोजित करना।
- समयबद्ध कृषक शिक्षा व प्रशिक्षण।

- उत्पाद शुल्क, सेवा केन्द्रों की स्थापना, सब्जी उत्पादन, कषि मशीनरी व औजारों के रखरखाव, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, फल व सब्जी परिरक्षण, पशुपालन,मुर्गी पालन, केंचुआ खाद उत्पादन आदि पर वैज्ञानिक प्रशिक्षण देना व उद्यमिता विकास कार्यक्रम का आयोजन करना।
- गृह विज्ञान व घरेलू स्तर के उद्योगों पर प्रशिक्षण देना।
- पशुओं के लिए यूरोमोल मिक्चर, मिनरल मिक्चर आदि संतुलित आहार तैयार करना।

समयबद्ध कृषि परामर्श सेवाएं

- कृषि निदानात्मक भ्रमण।
- मिनि किट प्रयोग, खेतों में प्रयोग, किसान मेले, प्रक्षेत्र दिवस, प्रक्षेत्र भ्रमण, गांवों को अपनाना, पशु चिकित्सा कैम्पों का आयोजन, कृषि प्रक्षेत्र, गृह भ्रमण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन करना।

समयबद्ध कृषि सूचना व प्रसार सेवा

- प्रकाशन–विभिन्न फसलों के लिए सिफारिश पुस्तिकाएं व अन्य प्रकाशन सामग्री का प्रकाशन करना।
- प्रिन्ट व इलैक्ट्रानिक मीडिया द्वारा प्रचार प्रसार, किसानों हेतु पखवाड़ा तैयार करना।
- कृषि संग्रहालय द्वारा किसानों को जानकारी प्रदान करना।
- रेडियों वार्ता व दूरदर्शन द्वारा परामर्श सेवाएं देना।
- कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र में दूरभाष द्वारा परामर्श देना।
- किसान काल सैंटर 1800–180–1551 के लिए नोडल एजैन्सी का कार्य करना।

महत्वपूर्ण उपलब्धियां:

- जिला कांगड़ा में बैंगन में लगने वाले बैक्टिरियल विल्ट हेतु वैज्ञानिक समाधन की तकनीक का विकास विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण उपलब्धी हैं।
- राष्ट्रीय नवोन्मेष परियोजना के द्वारा लोागें की उद्यमिता का विकास एक महत्वपूर्ण उपलब्धी है।

नए प्रयास व भविष्य के कार्यक्रम

- दूरदर्शन केन्द्र शिमला के सौजन्य से मीडिया समन्वयन।
- एक वैज्ञानिक, एक तकनीक, एक गांव के सिद्वान्त को अपनाना।
- तकनीकी ज्ञान को समृद्ध करने हेतु प्रयास।
- प्रशिक्षार्थियों का पूर्व प्रशिक्षण व प्रशिक्षणोतर मूल्यांकन।
- भूतपूर्व प्रशिक्षणार्थियों के लिए सम्मेलन आयोजित करना।
- कृषि विज्ञान केन्द्रों को नेटवर्किंग सुविधा प्रदान करना।